क्या मुझे मसीहि बनने के कलीसिया /चर्च जाना होगा?

ठिक है, मुझे आप सभी का ध्यान आकर्षित करने दें

और हम सप्ताह के हमारे बड़े प्रश्न को पूछने जा रहें हैं,

जो है, "मसीही होने के लिए क्या मुझे
कलीसिया (चर्च) जाना होगा?"

और आज रात जो पहली बात मैं कहना चाहता हूँ,
वह है कलीसिया मे जाना

परमेश्वर के लोगों से मुलाकात करना है-
कलीसिया मे जाने से मेरा मतलब यही है।

मेरा मतलब कोई इमारत नहीं है।
मेरा मतलब है परमेश्वर के लोगों से मिलने जाना -

इससे आप मसीही नहीं हो जाते।
यह पहली बात है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ।

सिर्फ क्योंकि आप मसीही लोगों से मिलते हैं इसका
मतलब यह नहीं की आप मसीही हैं।

अब, मैं इसे कैसे समझाऊँ? ठीक है, अब
आपको आपकी कल्पना का फिर से उपयोग

करना होगा। मैंने इससे पूर्व सभी प्रकार के खेलकूद के
उदाहरणों का उपयोग किया है,

परंतु अब मैं चाहता हूँ की आप कल्पना करें की हम
अमरीका में है और यह एक बड़ा बेसबॉल खेल है।

तो आप सभी दर्शक हैं, और मैं तैयार हूँ, ठीक हैं?
हम आगे बढ़ते हैं। तो मेरे पास मेरा बल्ला हैं।

मुझे यह भी निश्चितरूप से पता नहीं की इसे
पकड़ने का यह तरीका सही है भी या नहीं।

परंतु मैं वहाँ हूँ और सम्पूर्ण मैच मुझपर टिका है,
इन 3 आखरी गेंदों पर।

तो पहली गेंद मेरी ओर आती है
और मैं इसे चूक जाता हूँ।

चलो, कोई बात नहीं, मेरे पास दो और हैं। अगली वाली,
मुझे नहीं मिलती। मैं उसे छोड़ देता हूँ।

© Lee McMunn, 2011

एक बॉल अभी भी शेष है। पूरे
मैच का दारोमदार इसी पर टिका है।

क्या आप रहस्य में हैं? क्या आप तनाव में हैं?
और यह रहा! और वह मेरी तरफ आती है।

और ये रहा। मै इसे मारता हूँ। और वह जाती है,
हवा में, और मैं दौड़ने लगता हूँ।

और मैं सचमुच, सचमुच तेज़ भागता हूँ। वहाँ,
मैं दौड़ रहा हूँ और दौड़ रहा हूँ, और मैं अंदर लौटता हूँ

इसके पहले की कोई गेंद फेंक कर मुझे आऊट करने
की कोशिश करे, परंतु मैं अंदर हूँ और जश्न मनाता हूँ।

मैं अभीवादन कर रहा हूँ और आप सभी लोग मेरे
लिए खुश है, क्योंकि मैंने होम रन बना लिया है

और यह आनंदमय है, और सभी लोग उठते है,
उनकी कुर्सियों से, और तब रेफरी बोलता है,

लाउडस्पिकर पर और वह कहता है, "नहीं, आप आऊट हैं।"
और हम सोचते हैं, "क्या? कैसे?

उसे राऊँड मिला है। निश्चित ही उसने पूरा
चक्कर लगाया है। वह बढ़ियां मारा था।

वह पूरा चक्कर लगा पाया है"।
रेफरी कहता है, "नहीं, वह आऊट है"।

और आप सोचते हैं, "क्यों?" और रेफरी कहता है,
"क्योंकि वह पहले बेस को चूक गया था।

वह सीधे दूसरे, तीसरे, चौथे कि ओर दौड़ा
परंतु वह पहला बेस चूक गया था"।

अच्छा, बिलकुल! बिलकुल मैं आऊट हूँ।
क्योंकि जिस तरीके से आप बेसबॉल खेलते है

आप छोटी चीज़ को मारने में कामयाब होने के बाद ही-
आपको जाना होता है पहले,

दूसरे, तीसरे, होम। आपको ऐसे करना होता है।

आप सिर्फ दूसरे पर नहीं जा सकते, क्योंकि अगर आप
दूसरे पर जाते हैं, तो आप आऊट है। यह काम नहीं करता।

© Lee McMunn, 2011

तो यह एक उदाहरण है सिर्फ आपको
मसिही बनने को समझने मे मदद करने के लिए।

दूसरा बेस है परमेश्वर के लोगों से जुड़ना।
यह स्थानिक कलीसिया का हो जाना है।

पहला बेस है व्यक्तिगत रीति से
अपने को यीशु को सौंपना।

अब कई लोग होते हैं जो पहले बेस को चूक जाते हैं।

कई लोग ऐसे होते हैं जो परमेश्वर
के लोगों से मिलना पसंद करते हैं।

यह शायद इसलिए हो कि वे जिस देश में पैदा
हुए वहाँ इसका अर्थ केवल चर्च जाना हो,

या हो सकता है उन्हे परमेश्वर के लोग अच्छे
लगते हैं और वे उपस्थित रहते हैं।

और यह सब बहुत मिलनसार और मित्रतापूर्ण है,
परंतु आप देखें की क्या हुआ?

उन्होंने पहला बेस छोड़ दिया है।
वे सिर्फ परमेश्वर के लोगों से मिलते हैं।

और हमें सबसे पहले यह समझना है कि
सबसे पहले हमें पहले बेस पर जाना जरूरी है।

हमें व्यक्तिगत रीति से यीशु को समर्पण करना है।
मसीही होने का यही मतलब है।

परंतु प्रश्न यह है, "अब जब मैं वहाँ पहुंच चुका हूँ,
'अब आगे क्या है?

मसीही होने के लिए क्या मुझे
कलीसिया जाना होगा?"

अच्छा, जो पहली चीज़ जो मैं आपके
दिमाग में डालना चाहता हूँ,

वह यह नहीं है कि आपको मसीही
होने के लिए कलीसिया मे जाना होगा,

वह है की आपको कलीसिया में जाने का मौका मिलता है।
वास्तव मे यह कोई बुरी चीज़ नहीं है।

© Lee McMunn, 2011

यह ऐसा नहीं की आपको एक बड़ा ठेका मिलता है और
फिर आपका ध्यान नीचे छपी छोटी लिखाई पर जाता है,

और छोटी लिखावट में कुछ है, और पता है, आप कहते हैं,
"मैं जानता था यह इतना बढ़ियां नहीं होगा।

और ये रहा। मैंने कहा था! यह उस
छोटी लिखावट में हैं!" यह वैसा नहीं है।

ऐसा नहीं की आप यीशु के बारे में
ज्यादा समझते हैं, और आप सोचते हैं,

"वाह, यह अद्भुत है! मुफ्त क्षमा,
मेरे निर्माणकर्ता परमेश्वर के साथ घनिष्ट संगति,

अनंत जीवन -वाह!" और तब आप सोचते हैं। "ओह!
छोटी लिखावट। इसे देखें!

मुझे कलीसिया जाना होगा" नहीं। यह इस तरह नहीं है।
इसे इस रीति से देखना है की यह एक सौभाग्य

और आनंद कि बात है परमेश्वर के लोगों को मिलना,
यही तो कलीसिया है।

अब, ऐसा क्यों? अच्छा, परमेश्वर के लोगों से

वर्तमान मे मेल को समझने के लिए, मुझे आपको
याद दिलाने दें की परमेश्वर कि भविष्य की योजनाएँ क्या है।

परमेश्वर पिता क्या कर रहा है,
क्या वह विश्व भर में एक परिवार को इकट्ठा कर रहा है

जो सब प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करते है,
दुनिया भर के सभी राष्ट्रों से,

सारी संस्कृतियों से,
सब रंगों कि त्वचा से,

और वे सब यीशु मसीह के पीछे चल रहें हैं।
और वह एक दिन तैयार कर रहा है

जब वे सभी इकट्ठा होंगे
एक नई सुंदर दुनिया में।

अब इस में से कुछ हम पहले देख चुके है।
एक भविष्य का दिन है

© Lee McMunn, 2011

जब यीशु वापस आएगा और वह महिमामय होगा।

हमारे पास शारीरिक पुनरुत्थान के शरीर होंगे
हम हमेशा के लिए जीएँगे।

हम हमारे महान निर्माणकर्ता की संगती में होंगे,
परंतु इस विश्वव्यापी परिवार

की संगती में भी होंगे,
एक लोगों की बड़ी भीड़ जिन्हें हम गिन नहीं सकते।

परंतु अब के बारे में क्या? हम कैसे उस
भविष्य के महान जमघट की प्रतीक्षा करें

जब हम यीशु की स्तुती करेंगे
उस के लिए जो उसने किया है?

अच्छा, परमेश्वर हमें मौका देता है की हम अब उस
परिवार के कुछ लोगों से मुलाकात करें

दुनिया के स्थानीय क्षेत्रों में।
यही तो वह कलीसिया हैः

लोगों का छोटा झुंड है
जो एक साथ इकट्ठा होते हैं।

और यह एक आनंद और सौभाग्य की बात है।
क्योंकि, यह क्या है?

यह भविष्य का छोटा सा स्वाद है,
इस समय।

और यह हमारे आनंद और
अप्रतिम खुशी के लिए है।

तो जैसे ही हम अन्य लोगों के साथ इकट्ठा होते हैं
जो यीशु के द्वारा छुडाए गए हैं,

जैसे हम परमेश्वर पिता की स्तुती गाते हैं, जैसे हम
उसे धन्यवाद देते हैं जो यीशु ने किया उसके लिए,

जैसे हम उस से प्रार्थना करते हैं,
जैसे हम उसके वचन से सुनते हैं -

इस सब को एक अप्रतिम खुशी और आनंद होना है!
यह भविष्य का छोटा सा स्वाद है।

© Lee McMunn, 2011

अब, केवल यही नहीं कि हमें
कलीसिया जाने का मौका मिलता है,

परंतु आज रात हमें प्रभु यीशु मसीह कि
आज्ञा को भी सुनना है।

क्योंकि आज रात उसने हमसे क्या कहा है?
उसने कहा है, "एक दूसरे से प्रेम करो"।

अब, यह यीशु की ओर से आज्ञा हैं।

केवल यह नहीं कि, यीशु कहता है,
"अब, यह मेरा सुझाव है।"

यह नहीं की, "यह मेरी राय है।" यह है,
"यह मेरी आज्ञा है। एक-दूसरे से प्रेम करो।"

हम पहले ही देख चुके हैं की मसीही बनना,
हाँ, हमेशा व्यक्तिगत होता है।

परंतु एक अकेला होना नहीं होता।
हमारी सामूहिक जिम्मेदारीयाँ हैं एक-दूसरे के लिए है

हमें एक-दूसरे से प्रेम करना है। और एक-दूसरे
से प्रेम के तरीकों मे से एक है

एक साथ इकट्ठा होना
एक-दूसरे से मिलने के लिए।

अब, इस के बारे में सोचें,
उस मिलना को भी एक प्रोत्साहन होना है,

क्योंकि प्रेम किस चीज़ के बारे में है?

अच्छा, प्रेम, आप दूसरे व्यक्ती की
रुचियों को ध्यान मे रखते हैं।

आप चाहते है कि उनकी देखभाल हो।
और हमारी सबसे बड़ी जरूरत क्या है?

अच्छा, हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत आत्मिक है,
हमारा आत्मिक स्वास्थ्य।

की हम बढ़ते रहें और अधिक
यीशु के समान होने के लिए

© Lee McMunn, 2011

की हम मसीही जीवन में चलते रहें,
जैसे हम दिन ब दिन जीते हैं,

की हम यीशु में विश्वास करते रहते हैं।

और एक मार्ग जो परमेश्वर ने अपने लोगों को दिया है
यह निश्चत करने केलिए की यह हो रहा है,

वह है जब वे नियमित रूप से
एक साथ इकट्ठा होते है।

यह उन मार्गों में से एक है जिससे हम एक-दूसरें से
प्रेम करते हैं। और ज़रा इसके बारे में सोचें!

जब आप इकट्ठा होते है, यह कितनी प्रेरणा देता है,
यह क्या ही प्रोत्साहन से भरा होता है।

मसीही जीवन में आगे बढ़ते रहने के लिए।

और तब सोचें की क्या हो सकता है जब हम एक-
दूसरे से मिलते हैं।

हम एक-दूसरे को सिखा सकते है, हम एक-दूसरे के लिए
प्रार्थना कर सकते हैं, हम एक-दूसरे को आलिंगन दे सकते है,

हम यह सारी चीज़ें कर सकते हैं
आगे बढ़ते रहने के लिए।

हम प्रयोगात्मक तरीके से एक-दूसरे की
देखभाल कर सकते हैं आगे बढ़ने के लिए।

यह हमें परमेश्वर द्वारा दिए मार्गों में
से एक है एक दूसरे से प्रेम करने के लिए।

तो मसीही बनना, कलीसिया जाना
यह सिर्फ मेरे फायतें के लिए नहीं,

यह दूसरे लोगों के फायदे के लिए भी है।

यह उन मार्गों में से एक है
जिनसे हम एक-दूसरे की सेवा करते हैं।

अब उस व्यक्ति के बारे में क्या जो कहता है,
“ठीक है, पर मेरे पास इसके लिए समय नहीं है।

आप जानते हैं, जीवन व्यस्त है! शायद 5 सप्ताहों में
एक बार, 6 सप्ताहों में एक, मैं नहीं जानता

© Lee McMunn, 2011

परंतु यह परमेश्वर के लोगों के प्रति नियमित वचनबद्धता,
मेरे पास इसके लिए समय नहीं है"।

आप ऐसे व्यक्ति से क्या कहेंगे?
मैं ऐसे व्यक्ति से कहना चाहुंगा,

"क्या मैं आपको बता सकता हूँ-
आपके पास सभी चीज़ों के लिए समय नहीं होता"।

हर एक के पास दिन में कुछ
सीमित घंटे ही होते हैं।

हम जो करना चाहते है वो सबकुछ नहीं कर सकते।
परंतु होता यह है कि जब समय थोड़ा होता है,

आप खोज लेते हैं की आपके लिए सचमुच
क्या मायने रखता है। और मसीही बनना

हमारी प्राथमिक्तों को बदल देता है और उन में से एक
बड़ी प्राथमिक्ता हमारी होनी चाहिए

बाहर की ओर देखना, अपने भाइयों और
बहिनों का खयाल करना।

तो यीशु कह रहें हैं,
"निश्चित करें कि आप पहले बेस को जाएँ।

निश्चित करें कि आप मसीही बनते हैं, दूसरे बेस
तक न जाएँ"। परंतु जैसे आप यीशु के पास आते हैं,

देखें की वह, हाँ, वह व्यक्तिगत तो है,
परंतु एक अकेला होना नहीं।

और इसे सौभाग्य के रूप में देखें की हमें एक दूसरे को
प्रेम करने की जिम्मेदारियाँ मिली है

जबतक हम उस महान सिंहासन के इर्द-गिर्द
इकट्ठा नहीं होते जो स्वर्ग में है।

ठीक है, क्यों न आप आपके टेबलों पर
इसके बारे में बातचीत करें

मुझे लगता है कुछ बड़ी चीजें हैं विचार-विमर्श करने के लिए,
तो क्यों न आप कुछ मिनिटों के लिए बातचीत करें।

© Lee McMunn, 2011

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com